Sample Question Paper-1

(Specimen Paper issued by CISCE dated 12th July, 2022)

Hindi

Class-10

SOLVED

Time Allowed : 3 hours **Maximum Marks : 80**

Answer to this Paper must be written on the paper provided separately.
*You will not be allowed to write during the first **15 minutes**.*
This time is to be spent in reading the question paper.
The time given at the head of this Paper is the time allowed for writing the answers.

***Section A** is compulsory – **All** questions in **Section A** must be answered.*
*Attempt **any four** questions from **Sections B**, answering at least **one** question each from the **two** books you have studied and **any two** questions from the same books you have studied*
The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

Section-A

(*Attempt **all** questions from this Section.*)

Question 1.

Write a short composition in **Hindi** of approximately **250** words on any **one** of the following topics:

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए— **[15]**

(i) जीवन में खेलकूद मनोरंजन प्रदान करने के साथ-साथ सुख समृद्धि भी देते हैं। विद्यार्थी जीवन में इसकी उपयोगिता बहुत अधिक है। अपने किसी प्रिय खेल का वर्णन करें तथा यह खेल भविष्य में आपको कैसे लाभान्वित कर सकता है, निबन्ध में अपनी भविष्य की योजनाएँ भी बताइए।

(ii) 'परोपकार की भावना लोक-कल्याण से पूर्ण होती है।' हमें भी परोपकार से भरा जीवन ही जीना चाहिए। विषय को स्पष्ट करते हुए अपने विचार लिखिए।

(iii) 'स्वच्छता अभियान में सरकारी तन्त्र की अपेक्षा नागरिकों की जागरूकता अधिक प्रभावपूर्ण मानी जाती है' जनता के सहयोग से ही देश स्वच्छ सुन्दर बन सकता है, आप इस कथन से कहाँ तक सहमत है? स्पष्ट करें।

(iv) एक मौलिक कहानी लिखिए, जिसके अंत में ये स्पष्ट हो "जाको राखे साइयाँ। मार सके न कोय।"

(v) नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कोई लेख, घटना अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट सम्बन्ध चित्र से होना चाहिए।

To know about more useful books Click Here

Question 2.

Write a letter in **Hindi** in approximately **120** words on any **one** of the topics given below: **[7]**

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए—

(i) आपका छोटा भाई अपना अधिकांश समय मोबाइल फोन के उपयोग में बिताता है। मोबाइल फोन के अधिक उपयोग से होने वाली हानियों का उल्लेख करते हुए उसे पत्र लिखिए।

(ii) आपके क्षेत्र में मलेरिया तथा डेंगू का प्रकोप बढ़ गया है। इसकी रोकथाम के लिए नगर–निगम के अध्यक्ष को एक पत्र लिखिए।

Question 3.

Read the passage given below and answer in **Hindi** the questions that follow, using your own words as far as possible :

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए—

सन्त कबीर ने स्थान–स्थान पर जाकर पर्याप्त भ्रमण किया था। घुमक्कड़ होने के कारण ही उनकी भाषा में अरबी, फारसी, भोजपुरी, मगही, पंजाबी, राजस्थानी आदि अनेक भाषाओं के शब्द आ गए हैं। उनकी बोलचाल की अनपढ़ भाषा विविध आंचलिक शब्दों, उक्तियों तथा अपभ्रंश शब्दों से युक्त है, इसलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इसे सधुक्कड़ी भाषा कहकर पुकारते हैं। वैसे उनकी भाषा किसी भी प्रकार की हो, परन्तु उनका भाषा पर पूर्ण अधिकार था। वे जानते थे कि किस भाव को व्यक्त करने के लिए कौन–सा शब्द उपयुक्त होगा। यही कारण है कि भाषा चुपचाप उसी भाव को प्रकट करने लगती है। इसी ओर संकेत करते हुए आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है—"भाषा पर कबीर का ज़बरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा, उसे उसी रूप में भाषा से करवा दिया है—बन आया तो सीधे–सीधे, नहीं तो दविश देकर, भाषा कबीर के सामने कुछ लाचार–सी नज़र आती है। उसमें मानो हिम्मत नहीं है कि इस लापरवाह फक्कड़ को इन्कार कर सके। जैसी ताक़त कबीर की भाषा में है, वैसी बहुत कम लेखकों में पाई जाती है। इस प्रकार बोलचाल की चलताऊ तथा विविध भाषाओं के शब्दों से युक्त तथा व्याकरण के बन्धनों से मुक्त भाषा के माध्यम से कबीर ने गम्भीर विषय का अत्यन्त सरल रूप प्रस्तुत किया है। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का कथन सत्य ही है। सच पूछा जाए तो आज तक हिन्दी में ऐसा ज़बरदस्त व्यंग्य लेखक पैदा ही नहीं हुआ। उसकी साफ़ चोट करने वाली भाषा, बिना कहे भी सब कुछ कह देने वाली शैली अत्यन्त सही, किन्तु अत्यन्त तेज़ प्रकाशन अनन्य असाधारण है।

(i) कबीर का स्वभाव कैसा था और उसके कारण उन्हें क्या कहा जाता था? **[2]**

(ii) कबीर की भाषा में कौन–सी विशेषताएँ पाई जाती हैं? **[2]**

(iii) आचार्य शुक्ल ने कबीर की भाषा के विषय में क्या कहा है? **[2]**

(iv) आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जी ने कबीर की भाषा के सम्बन्ध में क्या कहा है? **[2]**

(v) कबीर की भाषा को मुक्त भाषा क्यों कहा गया है? **[2]**

Question 4.

Answer the following according to the instructions given : **[8]**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए—

(i) 'निश्चेष्ट' का विलोम बताइए—

(a) सतर्क **(b)** प्रवेष्ट

(c) सचेष्ट **(d)** सजग

(ii) 'तालाब' का पर्यायवाची बताइए—

(a) सरि–सरिता **(b)** सर–सरोवर

(c) तड़ाग–पराग **(d)** पोखर–पाथर

(iii) 'काला' की भाववाचक संज्ञा बताइए—

(a) काली **(b)** कलिमा

(c) कलात्मक **(d)** कालिमा

(iv) 'भारत' का विशेषण बताइए—

(a) भारतीयता **(b)** भारतवर्ष

(c) भारती **(d)** भारतीय

(v) 'अभिलासा' का शुद्ध रूप बताइए—

(a) अभिलासा **(b)** अभलाषा

(c) अभीलाषा **(d)** अभिलाषा

(vi) 'घी के दिए जलाना' मुहावरे का अर्थ बताइए—

(a) दिवाली मनाना **(b)** पूजा-अर्चना करना

(c) खुशी मनाना **(d)** बहुत प्रसन्न होना

(vii) निर्देशानुसार उचित वाक्य बताइए—

धर्म का मानव मन पर प्रभाव पड़ता है। (वाक्य में 'प्रभावित' शब्द का प्रयोग कीजिए)

(a) धार्मिक मानव सबको प्रभावित करता है।

(b) धर्म मानव मन को प्रभावित करता है।

(c) मानव के मान को धर्म प्रभावित करता है।

(d) मन को प्रभावित करने वाला मानव धर्म है।

(viii) निर्देशानुसार उचित वाक्य बताइए—

रोम का राजा भीषण-रोग से पीड़ित हो गया। (वाक्य में 'कर दिया' का प्रयोग कीजिए)

(a) रोम के राजा को भीषण रोग ने पीड़ित कर दिया।

(b) रोम के राजा को एक भीषण रोग ने पीड़ित कर दिया।

(c) रोम के राजा को एक भयानक रोग ने पीड़ित कर दिया।

(d) रोम के राजा को एक रोग ने भयानक पीड़ित कर दिया।

Section-B

(*Attempt **four** questions from this Section.***)**

(*You must answer at least **one** question from each of the **two** books you have studied and any **two** other questions.***)**

साहित्य सागर-संक्षिप्त कहानियाँ
(SAHITYA SAGAR-SHORT STORIES)

Question 5.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

'दोनों घण्टों साथ बैठते, बातें करते'।

['बात अठन्नी की'—सुदर्शन]

[***'Baat Athanni Ki'—Sudarshan***]

(i) 'दोनों'—शब्द से किस-किस की ओर संकेत हैं? **[2]**

(ii) वे दोनों किस-किस के यहाँ काम करते थे? **[2]**

(iii) वे दोनों जिन लोगों के यहाँ काम करते थे, उनमें कौन-सी बात समान थी? **[3]**

(iv) किस घटना से स्पष्ट होता है कि दोनों में बहुत मैत्री थी? **[3]**

Question 6.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

उन दिनों एक प्रथा प्रचलित थी। यज्ञ के फल का क्रय-विक्रय हुआ करता था।

(i) क्रय-विक्रय शब्द का अर्थ लिखिए। **[2]**

(ii) यज्ञों के क्रय-विक्रय का क्या आशय है? **[2]**

(iii) सेठ जी यज्ञ बेचने कहाँ गए थे और क्यों? **[3]**

(iv) सेठानी द्वारा अपना यज्ञ बेचने का सुझाव दिए जाने पर सेठ जी की क्या प्रतिक्रिया हुई? **[3]**

[महायज्ञ का पुरस्कार-यशपाल]

[*Mahayagya Ka Puraskar—Yashpal*]

Question 7.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

'उस भीड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गई' 'रूनी कहकर चित्रा भीड़ की उपस्थिति को भूलकर अरुणा के गले से लिपट गई'।

[दो कलाकार-मन्नू भण्डारी]

[*Do Kalakar—Mannu Bhandari*]

(i) अरुणा और चित्रा कहाँ पर मिली हैं और यहाँ क्यों आई हैं? **[2]**

(ii) अरुणा के साथ कौन खड़े थे? चित्रा के पूछने पर अरुणा ने क्या बताया? **[2]**

(iii) अरुणा ने बच्चों से क्या कहा? क्या चित्रा ने उन्हें प्यार किया? **[3]**

(iv) बच्चों के बारे में अरुणा की बात सुनकर चित्रा क्या सोचने लगी? **[3]**

साहित्य सागर-पद्य भाग
(SAHITYA SAGAR-POEM)

Question 8.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

धर्म राज यह भूमि किसी की, नहीं क्रित है दासी,
है जन्मता समान परस्पर, इसके सभी निवासी।
सबको मुक्त प्रकाश चाहिए, सबको मुक्त समीरण,
बाधा रहित विकास, मुक्त आशंकाओं से जीवन।

[स्वर्ग बना सकते हैं—रामधारी सिंह दिनकर]

[*Swarg Bana Sakate Hai—Ramdhari Singh 'Dinkar'*]

(i) यह कविता किसने किसको सुनाई है? **[2]**

(ii) कवि ने 'मुक्त प्रकाश' और 'मुक्त समीरण' की इच्छा किसके लिए प्रकट की है? **[2]**

(iii) कवि ने मातृभूमि के बारे में क्या कहा है? **[3]**

(iv) इस धरती पर शान्ति लाने के लिए क्या आवश्यक है? **[3]**

Question 9.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the question that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

सात समंद की मसि करौं, लेखनी सब बनराय।
सब धरती कागद करौ, हरि गुण लिखा न जाए॥

['साखी'—कबीरदास]

['*Sakhi*'—*Kabirdas*]

(i) 'सात समंद' कहकर कवि क्या स्पष्ट करना चाहते हैं? **[2]**

(ii) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखें—
मसि, बनराय, कागद, लेखनी। **[2]**

(iii) 'हरि गुण लिखा ना जाए'—कबीर ने ऐसा क्यों कहा? **[3]**

(iv) कबीर दास जी का संक्षिप्त परिचय लिखें। **[3]**

Question 10.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

साईं सब संसार में, मतलब का व्यवहार।
जब लग पैसा गाँठ में तब लग ताको यार॥
तब लग ताको यार, संग ही संग डोले।
पैसा रहे ना पास, यार मुख से नहीं बोलें।
कह 'गिरधर कविराय' जगत यही लेखा भाई।
करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साईं॥

[गिरधर की कुंडलियाँ—गिरिधर कविराय]

[*Girdhar ki Kundliyan—Giridhar Kavirai*]

(i) संसार में लोग कैसा व्यवहार करते हैं? **[2]**

(ii) लोग मित्र किसे बनाते हैं और क्यों? **[2]**

(iii) लोग किन से बातें करना पसंद नहीं करते और क्यों? **[3]**

(iv) किस प्रकार के लोग बिरला होते हैं? समझाइए। **[3]**

नया रास्ता—सुषमा अग्रवाल

(NAYA RAASTA—SUSHMA AGARWAL)

Question 11.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

मीनू के हृदय में हीन भावना के कारण जो दु:ख के भाव थे, वे खुशी में परिवर्तित हो गए। प्रथम श्रेणी में पास होने पर फूली नहीं समाई।

(i) मीनू के हृदय में हीन भावना ने क्यों स्थान बना लिया था? **[2]**

(ii) मीनू को अपने परीक्षा परिणाम की सूचना कहाँ मिली थी? **[2]**

(iii) नीलिमा और मीनू के बीच क्या सम्बन्ध थे? मीनू नीलिमा को किस बात की सूचना देने आई थी और क्यों? **[3]**

(iv) मीनू के मन में प्रसन्नता, उदासी और पुन: प्रसन्नता के भाव कब और किस प्रकार जागृत हुए? **[3]**

Question 12.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए ओर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

आशा को देखने के लिए इंजीनियर आलोक, उसके मम्मी-पापा व उसकी बड़ी भाभी आए।

(i) आशा कौन है? क्या लड़के वालों ने उसे पसन्द कर लिया? **[2]**

(ii) लड़के वालों को आशा की बड़ी बहन के बारे में क्या बात बताई गई? **[2]**

(iii) बुआ ने इस लड़के की बात पहले किसके लिए चलाई थी? उस लड़की ने क्या कहा? **[3]**

(iv) उस लड़की की बात सुनकर पिताजी क्यों दु:खी हुए? समझाइए। **[3]**

Question 13.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

इतने में नीलिमा के पति सुरेन्द्र जी ने कमरे में प्रवेश किया उन्हें देखकर मीनू आश्चर्यचकित रह गई।

(i) मीनू इस समय कहाँ पर है? नीलिमा के पति को देखकर वह आश्चर्यचकित क्यों हो गई? **[2]**

(ii) क्यों, क्या हुआ नीलिमा को? मीनू के इस प्रश्न का सुरेन्द्र ने क्या उत्तर दिया? **[2]**

(iii) यह शुभ समाचार सुनकर मीनू की क्या प्रतिक्रिया हुई? **[3]**

(iv) मीनू ने नीलिमा के घर जाने से पहले क्या तैयारी की? वहाँ किसे देखकर मीनू आश्चर्यचकित रह गई? **[3]**

एकांकी संचय
(EKANKI SANCHAY)

Question 14.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

मैं जानती हूँ, मेरे ही तो बेटे हैं। माया, ममता किसी को छू नहीं गई है। हर बात में देश, धर्म और कर्त्तव्य की दुहाई देना उन्होंने सीखा है।

[संस्कार और भावना—विष्णु प्रभाकर]

[*Sanskar Aur Bhavana—Vishnu Prabhakar*]

(i) वक्ता अपने बेटों के विषय में क्या जानती है? **[2]**

(ii) माया, ममता किसी को छू नहीं गई है। इस कथन का क्या आशय है? **[2]**

(iii) बेटे हर बात में किसकी दुहाई देते हैं और यह उन्होंने किस से सीखा है? **[3]**

(iv) अतुल के पिता का चरित्र-चित्रण करें। **[3]**

Question 15.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the questions that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए ओर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

मुझे और लज्जित न करो। मेरी चोट का इलाज बेटी की ससुराल वालों ने दूसरी चोट से कर दिया है।

[बहू की विदा—विनोद रस्तोगी]

[*Bahu Ki Vida—Vinod Rastogi*]

(i) मुझे और लज्जित न करो—किसने कहा? उसका संक्षिप्त परिचय लिखिए। **[2]**

(ii) मेरी चोट से क्या आशय है? उसने ऐसा क्यों कहा? **[2]**

(iii) जीवन लाल के मन में पश्चाताप का भाव कब पैदा हुआ? **[3]**

(iv) इस अवतरण के आधार पर एकांकी के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए। **[3]**

Question 16.

Read the extract given below and answer in **Hindi** the question that follow :

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए—

ना बेटा मैं अपने जीते जी यह सब न होने दूँगा। तुम चिन्ता न करो। मैं सबको समझा दूँगा।

[सूखी डाली—उपेन्द्रनाथ 'अश्क']

[*Sookhi Daali—Upendra Nath 'Ashk'*]

(i) वट वृक्ष को देखकर दादा जी के मन में कौन-सी कल्पनाएँ जाग जाती हैं? **[2]**

(ii) दादा जी का मन क्या सोचकर सिहर उठता है? वे किस चिन्ता में डूबे हैं? **[2]**

(iii) दाजा जी कैसे विचारों के व्यक्ति हैं? उनकी क्या अभिलाषा है? **[3]**

(iv) अपनी छोटी बहू के विषय में दादा जी के क्या विचार हैं? **[3]**

●●

SOLUTIONS

Sample Question Paper-1

Hindi

SECTION-A

1. (i) जीवन में खेलकूद का भी उतना ही महत्त्व है, जितना कि पढ़ाई-लिखाई का। खेलकूद न केवल छात्रों का मनोरंजन करते हैं अपितु उनके स्वास्थ्य को भी उत्तम बनाते हैं। यदि बच्चे प्रसन्न और स्वस्थ रहेंगे तो पढ़ाई-लिखाई की ओर भी ध्यान देंगे। सभी के पसंदीदा खेल अलग-अलग होते हैं। मेरा प्रिय खेल क्रिकेट है और मुझे क्रिकेट खेलना बहुत पसन्द है। क्रिकेट खेलने से मेरे शरीर में चुस्ती बनी रहती है। यह दुनिया भर में खेला जाता है और यह हर देश को सर्वाधिक पसन्द आता है। युवा इसे खेलना बहुत ही ज़्यादा पसन्द करते हैं। सचिन तेंदुलकर, महेन्द्र सिंह धोनी और विराट कोहली मेरे पसन्दीदा खिलाड़ी हैं। पहले के समय में जहाँ खेल महज कामयाब खिलाड़ी देश का नाम रोशन करने के अलावा नौकरी के क्षेत्र में सक्रिय होकर अपने विभाग का नाम भी रोशन करता है। इसके लिए ज़रूरी है कि विद्यार्थी जीवन से ही अपने खेल की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लें, निरन्तर अभ्यास करें तथा साथ ही उसके दिन-प्रतिदिन होने वाले मैच और उससे सम्बन्धित समाचारों को सुनें, जिससे खेल की बारीकियों से समझा जा सके और इससे स्वयं को, परिवार को तथा देश को लाभान्वित कर सकें।

(ii) "परोपकार की भावना लोककल्याण से पूर्ण होती है"

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में वह मिल-जुलकर रहता है। एक-दूसरे के सुख-दु:ख में भागीदार होता है। मानव समाज के सुसंचालन के लिए मानव हृदय में परोपकार की भावना का होना नितांत आवश्यक है। मनुष्य तो स्वभाव से ही परोपकारी जीव है। दूसरों के कष्टों को देखकर हम प्रभावित होते हैं और उन्हें दूर करने का जो भाव हमारे दिल में उत्पन्न होता है तब यही परोपकार की भावना का जन्म होता है। परोपकार शब्द पर + उपकार दो शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है दूसरों की भलाई करना।

"परमहित सरिस धर्म नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥"

अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि इस संसार में अपने और दूसरों का भेद ही सांसारिक माया है। अनंत जलराशि का भार ढोने वाली नदियाँ अपने जीवन में सुबह से शाम तक लगातार सिर्फ दूसरों के कल्याण के लिए ही बहती हैं। वृक्ष भी आँधी-तूफान सहते हुए चुपचाप खड़े रहते हैं ताकि थके, भूखे लोगों को अपनी छाया तथा फल प्रदान करके उनकी भूख और थकावट दूर कर सकें।

मानवता का उद्देश्य तथा मानव जीवन तभी सार्थक हो सकता है जब वह अपने कल्याण के साथ-साथ दूसरों के कल्याण के विषय में भी सोचे। यदि हमारे पास धन है तो निर्धनों की मदद करें, यदि विद्या है तो अशिक्षित को शिक्षा प्रदान करें, अत: परहित साधना ही सच्ची मानवता है।

हमारे देश में अनेक परोपकारी महान् पुरुषों ने जन्म लिया है, जिन्होंने परोपकारी अमरबेल को सींचा है। जैसे—रंतिदेव ने भूख से व्याकुल होने पर भी अपना भोजन से भरा थाल एक भूखे व्यक्ति को दे दिया। महाराज शिवि ने एक कबूतर की प्राण रक्षा के खातिर अपने शरीर का माँस तक दान कर दिया। महाकवि निराला जी का पूरा जीवन ही परमार्थ में बीता है।

परोपकार की शिक्षा किसी भी विद्यालय में नहीं सिखाई जाती है। परोपकार करने की शिक्षा अपने घर-परिवार से ही प्राप्त होती है। परोपकार की भावना से मनुष्य का हृदय बिना पानी और बिना साबुन के ही निर्मल बन जाता है। देश के उत्थान के लिए सदैव ही परोपकारी व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि मानव अपने स्वार्थ की भावना का त्याग करके, मानवता के कल्याण के लिए प्रयत्न करे। वास्तव में परोपकार से बड़ा न कोई पुण्य है न कोई धर्म।

(iii) भारत देश किसी ज़माने में सोने की चिड़िया कहा जाता था, अपने वैभव और संस्कृति के लिए जाना जाता था। लेकिन समय के बदलाव के चलते हमारी देश की हालत खराब हो गई। हमारे देश को स्वच्छ बनाने के लिए भारत सरकार ने एक नई योजना निकाली है, जिसका नाम 'स्वच्छ भारत अभियान' रखा गया है। इस अभियान के तहत सभी देशवासियों को इसमें शामिल होने के लिए कहा गया है। देश की पूर्णतया स्वच्छता का सपना कई महापुरुषों ने देखा था और उन्हें साकार करने की भी कोशिश की थी लेकिन वह किसी कारण सफ़ल नहीं हो पाए। यह अभियान आधिकारिक रूप से **1999** से चल रहा है। पहले इसका नाम 'ग्रामीण स्वच्छता

अभियान' था, लेकिन 1 अप्रैल, 2012 को प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस योजना में बदलाव करते हुए इस योजना का नाम 'निर्मल भारत अभियान' रख दिया और बाद में सरकार ने इसका पुनर्गठन करते हुए इसका नाम 'पूर्ण स्वच्छता अभियान' कर दिया था। 'स्वच्छ भारत अभियान' का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महात्मा गाँधी जी की 145वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर, 2014 को किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए दिल्ली की वाल्मिकी बस्ती में सड़कों पर झाड़ू लगाई थी। जिससे देश के लोगों में यह जागरूकता आए कि अगर हमारे देश का प्रधानमंत्री देश को स्वच्छ करने के लिए सड़क पर झाड़ू लगा सकता है, तो हमें भी अपने देश को स्वच्छ रखने के लिए अपने आस-पास सफ़ाई रखनी होगी। अक्सर देखा जाता है कि इस गंदगी और कूड़े-करकट के ज़िम्मेदार भी हम और आप ही हैं, क्योंकि हम लोग भी कभी-कभी जानबूझकर गंदगी करते हैं और इसके साथ ही हमारा पूरा वातावरण प्रदूषित हो जाता है। यह गंदगी और कूड़ा-करकट दिन-ब-दिन बढ़ते ही जा रहे हैं जिसके कारण अनेकों परेशानियाँ खड़ी हो रही हैं, इसलिए 'स्वच्छ भारत अभियान' की ज़रूरत पड़ी जिसके तहत हमारा पूरा भारत स्वच्छ और साफ़ दिखाई दे। प्रस्तुत कथन से पूर्णतया सहमत होते हुए हम स्वयं तथा देश के प्रत्येक नागरिक से अपेक्षा करते हैं कि भारत को स्वच्छ व सुन्दर बनाए रखने के लिए अपना योगदान देना होगा। यदि हर नागरिक इसे अपनी ज़िम्मेदारी समझ ले तो वो दिन दूर नहीं जब हमारा भारत फिर से सोने की चिड़िया कहलाएगा।

(iv) बहुत समय पहले की बात है। किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसके पास बहुत सारे जानवर थे, उन्हीं में से एक गधा भी था। एक दिन वह चरते-चरते खेत में बने एक पुराने सूखे कुँए के पास जा पहुँचा और अचानक ही उसमें फिसल कर गिर गया। गिरते ही उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया—ढेंचू-ढेंचू-ढेंचू-ढेंचू..। उसकी आवाज़ सुनकर खेत में काम कर रहे लोग कुँए के पास पहुँचे और किसान को भी बुलाया गया।

किसान ने स्थिति का जाएज़ा लिया। उसे गधे पर दया तो आई लेकिन उसने मन में सोचा कि इस बूढ़े गधे को बचाने से कोई लाभ नहीं है और इसमें मेहनत भी बहुत लगेगी, साथ ही कुएँ की भी कोई ज़रूरत नहीं है उसने बाक़ी लोगों से कहा, "मुझे नहीं लगता कि हम किसी भी तरह इस गधे को बचा सकते हैं, अत: आप सभी अपने-अपने काम पर लग जाइए, यहाँ समय गँवाने से कोई लाभ नहीं।"

ऐसा कहकर वह आगे बढ़ने को ही था कि एक मज़दूर बोला, "मालिक, इस गधे ने वर्षों तक आपकी सेवा की है, इसे इस तरह तड़प-तड़प कर मरने देने से अच्छा होगा कि हम उसे इसी कुँए में दफना दें।"

किसान ने भी सहमति जताते हुए उसकी हाँ में हाँ मिला दी। "चलो हम सब मिलकर इस कुएँ में मिट्टी डालना शुरू करते हैं और गधे को यहीं दफना देते हैं", किसान बोला। गधा ये सब सुन रहा था तथा अब वह और भी डर गया। उसे लगा कि कहाँ उसके मालिक को उसे बचाना चाहिए उल्टे वे लोग उसे दफनाने की योजना बना रहे हैं, परन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी और भगवान को याद कर वहाँ से निकलने के बारे में सोचने लगा।

अभी वह अपने विचारों में खोया ही था कि अचानक उसके ऊपर मिट्टी की बारिश होने लगी। गधे ने मन-ही-मन सोचा कि भले कुछ भी हो जाए वह अपना प्रयास नहीं छोड़ेगा और आसानी से हार नहीं मानेगा। वह पूरी ताक़त से उछाल मारने लगा। किसान ने भी औरों की तरह मिट्टी से भरी एक बोरी कुँए में झोंक दी और उसमें झाँकने लगा। उसने देखा कि जैसे ही मिट्टी गधे के ऊपर पड़ती वह उसे अपने शरीर से झटकता और उछलकर उसके ऊपर चढ़ जाता। किसान भी समझ चुका था कि अगर वह यूँ ही मिट्टी डलवाता रहा तो गधे की जान बच सकती है। फिर क्या था, वह मिट्टी डलवाता गया और देखते-देखते गधा कुँए के मुहाने तक पहुँच गया और अंत में कूद कर बाहर आ गया। इससे स्पष्ट होता है कि "जाको राखै साइयाँ। मार सके न कोय"

(v) "समाज सेवा ही हमारे जीवन जीने का मूल आधार है।"

अक्सर लोग अपने जन्मदिन को आलीशान होटलों एवं प्रतिष्ठानों में घर-परिवार या फिर अपने अज़ीज़ दोस्तों के साथ मनाते हैं लेकिन कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो अपने खुशी के पलों कि खुशियों को ग़रीबों के बीच जाकर बाँटते हैं। ऐसे वाक्यों को चरितार्थ करते हुए हमारे दादा ने अपना जन्मदिन नगर के ग़रीब बच्चों के बीच मनाया। गरीब बस्तियों में पहुँचकर छोटे बच्चों के बीच मिठाई व खाना बाँटकर अपनी खुशियाँ साझा की।

दादाजी ने वहाँ एकत्रित सभी लोगों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करते हुए उन्हें बहुत ही सुन्दर संदेश दिया कि—"जब ईश्वर ने हमें मनुष्य का जन्म दिया तब ही उसने हमें इस लायक बना दिया और इस जीवन को लोगों की मदद में लगाना चाहिए। मदद न करने के लिए बहाने तो लाखों मिल जाते हैं पर एक बार किसी की मदद कर जो सुकून मिलता है। वह तमाम ऐशोआराम आपको नहीं दे सकते। जीवन में हमें जब भी कुछ अच्छा करने का मौक़ा मिला तो अपने जीवन का वो हर एक मूल्यवान समय ऐसे ही सामाजिक कार्यों में समर्पित करता रहा हूँ। आज के वर्तमान समय में तो हर एक इंसान सिर्फ़ अपने में ही व्यस्त जिए जा रहा है तो हम यदि इसी समय में अपनों से निकलकर ऐसे जीवन्त सामाजिक कार्यों के करने से एकाकी जीवन से निकलकर आत्मिक सुकून

को प्राप्त करता हूँ जिसकी अनुभूति ही जीवन जीने का एकमात्र साध्य है। ऐसे में इन बच्चों के चेहरे पर खुशियाँ मेरे इस जीवन के लिए किसी भी पुरस्कार से कम नहीं, आज का दिन मेरे लिए यादगार पल है कि मैंने ऐसे समाज के बीच अपना जन्मदिन मनाया है जिसे मैंने कभी सोचा नहीं था आज ग़रीब बच्चों के बीच अपना जन्मदिन मना कर मुझे बहुत अच्छा महसूस हो रहा है। इस मौक़े पर मैं समाज के लोगों से कहता हूँ कि आप भी ऐसे नेक कार्यों में हिस्सा लीजिए, जिससे आपकी जो खुशी है वह दोगुनी हो जाए।"

2. (i) **126/2,** कमला नगर,

जयपुर

दिनांक : **xxx20XX**

प्रिय अनुज सम्यक्

शुभ आशीर्वाद।

आगे समाचार यह है कि दो दिन पहले मैं किसी काम से दिल्ली आया था तब मेरी भेंट तुम्हारे कक्षाध्यापक से हुई थी। वह बता रहे थे कि तुम आजकल मोबाइल फोन पर बातें करने में अपना अधिकांश समय व्यतीत कर रहे हो। शुभम् यह अच्छी बात नहीं है, विशेष तौर पर विद्यालय में मोबाइल लाना मना है और तुम नियम तोड़ने का कार्य कर रहे हो। यह उचित नहीं है। पिताजी ने खर्च की परवाह न करके तुम्हें अच्छी शिक्षा प्राप्त करने दिल्ली भेजा है, अत: तुम ईमानदारी से अपनी पढ़ाई करो। मोबाइल पर अधिकांश बातें तुम्हारी दोस्तों से ही होती होंगी। शायद तुम्हें पता नहीं है कि अधिक मित्रता अध्ययन में सबसे बड़ी बाधा है। मोबाइल से दोस्ती बढ़ेगी और समय बर्बाद होगा। जब पढ़ने बैठोगे, मोबाइल बजेगा, पढ़ाई चौपट हो जाएगी। ये मोबाइल फोन रात में भी नहीं सोने देते। मैं तुम्हारा अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल देखकर चौंक गया था। अध्यापक के बताने पर ही पता चला कि मोबाइल के कारण ही तुम्हारे अंक कम आए हैं। पिताजी ने मोबाइल तुम्हें इसलिए दिया था ताकि तुम घर पर समाचार बताते रहो। सच्चाई तो यह है कि विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थी के लिए मोबाइल का यही सदुपयोग है कि वह इसका इस्तेमाल घरवालों से सम्पर्क साधने तथा अपने विषय की अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने के लिए करें। इसलिए तुम अपना नम्बर बदलों और किसी को नया नम्बर मत दो, जिससे तुम्हारे मित्र तुम्हारे अध्ययन में दखलन्दाज़ी न करें। ईमानदारी से अपनी पढ़ाई करो और अपना सपना पूरा कर माता-पिता को गौरवान्वित करो।

माता-पिताजी का तुम्हें प्रेम भरा आशीर्वाद।

तुम्हारा अग्रज

रूद्र सिंह

(ii) प्रेषक

23/3, रतन नगर

दिल्ली

दिनांक : **xxx 20XX**

सेवा में,

अध्यक्ष महोदय

दिल्ली नगर निगम, दिल्ली

विषय : मलेरिया व डेंगू की रोकथाम हेतु पत्र।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान शहर के उपनगर गाँधीनगर में फैल रहे मलेरिया व डेंगू के बढ़ते प्रकोप और रोकथाम हेतु उपाय करने की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

मलेरिया व डेंगू संक्रामक रोग हैं, जो बड़ी तेज़ी से फैलते हैं। बरसात का पानी कई स्थानों पर रुका हुआ है और इसी कारण मच्छर बहुत अधिक उत्पन्न हो रहे हैं। हमारे क्षेत्र में कई लोग बीमार पड़ चुके हैं। कई लोगों की स्थिति अधिक खराब हो जाने पर उन्हें अस्पताल में भी भर्ती करवाना पड़ा है।

मेरा आपसे सविनय निवेदन यह है कि आप इन संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए पूरे क्षेत्र में मच्छर मारने की दवा छिड़कवाएँ। दूरदर्शन पर इन बीमारियों के फैलने के कारण, लक्षण व बचने के उपाय आदि की विस्तृत जानकारी बताकर सब को जागरूक करें। आशा है, आप इन रोगों को फैलने से रोकने के लिए तुरन्त उचित कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

राजदीप

3. (i) कबीर सरल तथा साधु स्वभाव के थे। स्थान-स्थान पर घूमने के कारण उनकी भाषा में कई भाषाओं का मिश्रण हो गया इस कारण इनका भाषा पर पूर्ण अधिकार था। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने "भाषा पर ज़बरदस्त पकड़ होने के कारण इन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' नाम दिया।

(ii) कबीर की भाषा में सामान्य तौर पर निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं—

(क) कबीर की भाषा में ब्रजभाषा, अवधि, खड़ी बोली, राजस्थानी, पंजाबी तथा अरबी फ़ारसी भाषाओं का मिश्रण है।

(ख) कबीर की भाषा संगीतात्मक है जिसमें अभिव्यंजना की समस्त पद्धतियाँ पाई जाती हैं।

(ग) कबीर की उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है।

(घ) कबीर भावनाओं को व्यक्त करने में पूर्ण रूप से सक्षम और समर्थ हैं। कबीर शब्दों को मूर्त रूप देने में माहिर हैं।

(iii) कबीर की बोलचाल की अनपढ़ भाषा विविध आंचलिक शब्दों, उक्तियों तथा अपभ्रंश शब्दों से युक्त होने के कारण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसे सधुक्कड़ी भाषा कहकर सम्बोधित किया।

(iv) आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि—"कबीरदास ने बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग किया है। भाषा पर कबीर का ज़बरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में करवा लिया-बन गया है तो सीधे-सीधे नहीं तो दबिश देकर।"

(v) कबीर की रचनाओं में अनेक भाषाओं के शब्द मिलते है। यथा—अरबी, फ़ारसी, पंजाबी, बुन्देलखण्डी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली आदि। इस कारण इनकी भाषा को मुक्त भाषा कहा जाता है।

4. (i) विकल्प (ग) सही है।

(ii) विकल्प (ख) सही है।

(iii) विकल्प (घ) सही है।

(iv) विकल्प (क) सही है।

(v) विकल्प (घ) सही है।

(vi) विकल्प (ग) सही है।

(vii) विकल्प (क) सही है।

(viii) विकल्प (ख) सही है।

SECTION-B

5. (i) दोनों शब्द का प्रयोग इंजीनियर बाबू जगत सिंह के नौकर रसीला और उनके पड़ोस में रहने वाले ज़िला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के चौकीदार रमज़ान के लिए किया गया है।

(ii) रसीला इंजीनियर बाबू जगत सिंह की यहाँ और रमज़ान ज़िला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के यहाँ काम करता था।

(iii) इंजीनियर बाबू जगत सिंह की और ज़िला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन दोनों की हैसियत अच्छी थी। रसीला ने मालिक जगत सिंह के रिश्वत लेने की बात रमज़ान को बताई तो उसने कहा कि उसके मालिक ने भी आज ही एक शिकार फाँसा है हज़ार से कम में नहीं मानेंगे। इससे यह पता चलता है कि दोनों के मालिक घूसघोर थे।

(iv) एक बार रसीला के बच्चे बीमार हो गए, जो गाँव में रहते थे। घर से खेत आने पर उसे उनकी बीमारी का पता चला पर इलाज के लिए भेजने को पैसे नहीं थे। रसीला ने अपने मालिक से माँगे लेकिन उन्होंने नहीं दिए। जब रमज़ान को इस बात का पता चला, तो उसने कुछ रुपए रसीला के हाथ पर रख दिए। इस घटना से पता चलता है कि रसीला और रमज़ान में गहरी मित्रता थी।

6. (i) क्रय-खरीदना

विक्रय-बेचना

(ii) यज्ञों के फल का क्रय-विक्रय हुआ करता था। छोटा-बड़ा जैसा यज्ञ होता, उनके अनुसार मूल्य मिल जाता।

(iii) सेठ दस-बारह कोस की दूरी पर कुंदनपुर नगर के धन्नाराम सेठ के पास यज्ञ बेचने गए, क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उन्होंने यज्ञ तथा दान-पुण्य के लिए अपने भण्डार खोल दिए और अपनी सारी दौलत इसी कार्य में लगा दी। उनके दैनिक जीवन की पूर्ति हेतु भी उनके पास पैसे नहीं थे। इस कारण वे सेठानी के कहने से यज्ञ बेचने निकले थे।

(iv) जब सेठ द्वारा यज्ञ तथा दान-पुण्य में सारा भण्डार खाली हो गया और उनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी, तो सेठानी को यज्ञ के क्रय-विक्रय की बात याद आई तब उसने सेठ को सलाह दी कि वो अपना एक यज्ञ बेच दे। यह सुनकर पहले तो सेठ बहुत दु:खी हुए परन्तु अपनी आर्थिक तंगी को देखते हुए उन्होंने यह बात मान ली।

7. (i) अरुणा और चित्रा छात्रावास में मिली थीं। यहाँ पर वो दोनों पढ़ने आई थीं साथ ही चित्रा अपनी चित्रकारी तथा अरुणा गरीब बच्चों को पढ़ाकर समाजसेवा करती थी।

(ii) अरुणा के साथ दो बच्चे खड़े थे। जब चित्रा ने पूछा कि ये दोनों बच्चे किसके हैं तो अरुणा ने चित्रा की भिखारिन वाली तस्वीर पर हाथ रख बताया कि ये दोनों भिखारिन के बच्चे हैं।

(iii) अरुणा ने बच्चों से कहा कि नमस्ते करो, ये तुम्हारी मौसी हैं। यह सुनकर चित्रा अवाक रह गई और बच्चों को देखने लगी फिर अरुणा ने कहा कैसी मौसी है? बच्चों को प्यार नहीं करेगी तब दोनों बच्चों के सिर पर हाथ फेर कर उसने प्यार किया।

(iv) एक-दूसरे से मिलने के बाद चित्रा अरुणा के साथ में आए बच्चों के विषय में पूछती है, तो अरुणा उसी भिखारिन वाले चित्र पर अँगुली रखकर बताती है कि वे उसी भिखारिन के बच्चे हैं जिसके बारे में स्वयं उस दिन चित्रा ने उसे बताया था। अरुणा दोनों बच्चों को अपने घर ले आई थी और उन्हें गोद लेकर उनका पालन-पोषण करने लगी है। यह देख चित्रा सोचती रह गई कि उसने केवल ख्याति प्राप्त करने के उद्देश्य से चित्र बनाया और अरुणा ने बिना किसी स्वार्थ के उन बच्चों को अपनाया।

8. (i) प्रस्तुत पंक्तियाँ भीष्म ने युधिष्ठर से कही हैं।

(ii) कवि ने यह इच्छा हर व्यक्ति के समान अधिकार का आभास कराते हुए बताया है कि हर व्यक्ति को समान रूप से प्रकाश और वायु चाहिए। साथ ही उसका जीवन बधरहित एवं भयमुक्त होना चाहिए।

(iii) कवि ने मातृभूमि के लिए सभी से कहा है कि ईश्वर ने मानव को जो अमूल्य भण्डार दिया है, उससे धरती के सभी मानव तृप्त हो सकते हैं। यदि मनुष्य स्वार्थ रहित होकर यदि इन सुखों को समतापूर्वक भोगे तो सबको सुख भी प्राप्त होगा और सभी संतुष्ट भी रहेंगे।

(iv) कवि ने भूमि के लिए 'क्रीत दासी' शब्द का प्रयोग किया है क्योंकि धरती किसी की क्रीत (खरीदी हुई) दासी नहीं है। इस पर सबका समान रूप से अधिकार है। धरती पर शान्ति के लिए सभी मनुष्य को समान रूप से सुख-सुविधाएँ मिलनी आवश्यक हैं।

9. (i) 'सात समंद' के माध्यम से कवि ने बताया है कि सातों समंदर की स्याही बना ली जाए और समस्त जंगलों की लकड़ी की लेखनी बना ली जाए और सम्पूर्ण धरती का कागज़ बना लिया जाए तो भी हरी के गुणों की व्याख्या नहीं की जा सकती है।

(ii) स्याही

जंगलों की लकड़ी

कागज़

क़लम

(iii) कबीर कहते हैं कि यदि सातों समंदर की स्याही बना ली जाए और समस्त जंगलों की लकड़ी की लेखनी बना ली जाए और सम्पूर्ण धरती का कागज़ बना लिया जाए तो भी हरी के गुणों की व्याख्या नहीं की जा सकती है। साहेब ने हमेशा से ही गुरु को ईश्वर के तुल्य माना है, जिसमें अथाह गुण हैं और जिसके गुणों का बखान नहीं किया जा सकता है। यदि सातों समुद्रों के जल की स्याही बना ली जाए और सभी वन समूहों की लेखनी बना ली जाए तथा सारी पृथ्वी को कागज़ कर लिया जाए, तब भी परमात्मा के गुणों को लिखा नहीं जा सकता क्योंकि वह परमात्मा अनंत गुणों से युक्त है जिसका वर्णन सम्भव नहीं है।

(iv) कबीर दास का जन्म **15**वीं शताब्दी के मध्य में काशी (वाराणसी, उत्तर प्रदेश) में हुआ था। कबीर दास एक प्रसिद्ध संत, समाज सुधारक तथा महान् कवि थे, जिन्होंने अपने जीवन में पाखण्ड, मूर्ति पूजा, अंधविश्वास का घोर विरोध किया। संत कबीर दास ने ईश्वर अल्लाह दोनों को एक कहा। भक्ति काल में जन्मे कबीर दास जी ईश्वर के एक परम भक्त थे, जिन्होंने भक्ति आन्दोलन में अपना अमूल्य सहयोग दिया था।

10. (i) गिरिधर कविराय ने प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से लोगों की स्वार्थी प्रवृति के सम्बन्ध में बताया है। कवि कहते हैं कि इस संसार में सभी लोग मतलबी हैं। बिना स्वार्थ के कोई किसी से मित्रता नहीं करता है।

(ii) कवि कहते हैं कि सभी धनी लोगों से मित्रता रखते हैं। जब तक मित्र के पास धन-दौलत है तब तक सारे मित्र उसके आस-पास घूमते हैं। मित्र के पास जैसे ही धन समाप्त हो जाता है सब उससे मुँह मोड़ लेते हैं। संकट के समय में भी उसका साथ नहीं देते।

(iii) जिसके पास पैसा नहीं, होता, उनसे लोग बात करना पसन्द नहीं करते क्योंकि उनकी नज़र में पैसा ही रिश्तों की पहचान है। इस कारण सभी अमीरों के पीछे भागते हैं, ग़रीब का कोई दोस्त नहीं होता। जब तक मित्र के पास धन-दौलत है तब तक सारे मित्र उसके आस-पास घूमते हैं। संसार में सभी मतलबी हैं। बिना स्वार्थ के कोई किसी से मित्रता नहीं करता है।

(iv) कवि कहता है कि वे लोग बिरले ही होते हैं जो बिना किसी स्वार्थ के सभी से विनम्रता से बात करते हैं। उनके लिए किसके पास पैसा है किसके पास नहीं यह बात मायने नहीं रखती। वे लोगों के मन में बसे प्रेम तथा उनकी सच्चाई से उनसे जुड़ जाते हैं। उन्हें इस बात से कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि उनका मित्र पैसे वाला है या नहीं।

11. (i) मीनू के नाक़-नक्श सुन्दर हैं परन्तु रंग साँवला होने के कारण दो बार लड़कों के द्वारा अस्वीकृत कर दिए जाने पर उसके हृदय में हीनभावना घर कर गई और उसने विवाह के बारे में सोचना ही बंद कर दिया।

(ii) मीनू नीलिमा से मिलने जाती है तब मीनू का भाई रोहित अखबार लेकर उन दोनों को एम.ए. का परिणाम बताने आता है, जिसमें मीनू प्रथम तथा नीलिमा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुई हैं।

(iii) नीलिमा मीनू की हमउम्र और उसकी अभिन्न मित्र है। नीलिमा जानती है कि विवाह के लिए ठुकराए जाने से मीनू काफ़ी उदास है। उसके साँवले रंग के कारण लोग उसे ठुकरा देते हैं। मेरठ वालों से मीनू को विवाह के लिए रिश्ता तय होने की उम्मीद होती है, इस कारण वह नीलिमा को खुश होकर बताने आती है कि मेरठ वालों ने उसकी तस्वीर विवाह के लिए पसन्द कर ली है और अब वे उसे देखने आएँगे।

(iv) मीनू खुश होकर मेरठ वालों के तस्वीर पसन्द कर लिए जाने के बाद लड़के वालों के आने की बात बताने गई वहाँ वह नीलिमा की सुन्दरता को देख अपने काले रंग और लड़कों द्वारा अस्वीकृत होने की बात से उदास हो जाती है, तभी उसका भाई एम.ए. का रिज़ल्ट बताने आता है और अपने प्रथम आने की सूचना पाकर पुनः खुश हो जाती है।

12. (i) आशा मीनू की बहन है। जिसे लड़के वाले देखने आए और उसका रिश्ता तय हो गया। आशा के सुन्दर होने के कारण उसे एक बार में पसन्द कर लिया गया।

(ii) लड़के वालों को यह बात इसलिए बताई गई थी कि आशा की बड़ी बहन की शादी नहीं हुई क्योंकि अगर नहीं बताई जाती तो उसकी छोटी बहन की अभी तक शादी नहीं हो पाती बड़ी बहन के बारे में बताना ज़रूरी था और यह भी बताया गया था कि उसकी बड़ी बहन अभी वकालत पढ़ रही है, इसलिए उसने अभी तक शादी नहीं की है और वह शादी में उतना भाग नहीं लेना चाहती है, अभी वह लगन और मेहनत के साथ आगे बढ़कर पढ़ाई करना चाहती है इसलिए आशा की शादी उससे हो जाती है।

(iii) बूआ ने दिल्ली के एक लड़के की बात मीनू के लिए चलाई। जोकि इंजीनियर था परन्तु मीनू ने कई बार ठुकराए जाने के बाद विवाह से अपना मन हटा लिया और पढ़ाई में ध्यान देने लगी। जब वह हॉस्टल से आई तो पिता ने उसे आलोक के बारे में बताया परन्तु उसने कहा मुझे विवाह नहीं करना आप इसके साथ आशा का रिश्ता कर दीजिए।

(iv) मीनू के द्वारा विवाह के लिए न करने तथा छोटी बहन की शादी करवा देने की बात सुनकर दयाराम दुःखी हो गए। उन्होंने मीनू को समझाया कि वो उसको इस हालत में देखकर चैन से मर भी नहीं पाएँगे, यह सुनकर मीनू रोए जैसी हो गई परन्तु उसने विवाह के लिए हाँ नहीं कहा। उन्हें बड़ी बेटी से पहले छोटी बेटी का विवाह करना अच्छा नहीं लग रहा था। पर मीनू के विवाह के लिए मना कर देने पर उन्होंने आशा के साथ दिल्ली से रिश्ते के लिए स्वीकृति दे दी। पर फिर भी वे मीनू को लेकर बहुत चिंतित थे।

13. (i) मीनू अपने हॉस्टल के कमरे में पत्र पढ़ रही है कि अचानक नीलिमा के पति को हॉस्टल में देख आश्चर्यचकित हो जाती है।

(ii) मीनू द्वारा नीलिमा के बारे में पूछने पर सुरेन्द्र ने बताया कि हमें पुत्र हुआ है। इस कारण वो आराम कर रही है।

(iii) हॉस्टल में मीनू को पुत्र के समाचार देने आए सुरेन्द्र की बात सुनकर मीनू खुश हो गई। वह उसके पुत्र होने तथा नीलिमा की भाग्यशीलता को सोचकर प्रसन्न हो रही थी कि उसे कितना सुन्दर एवं अच्छा पति मिला है जो उसे बहुत प्यार करता है।

(iv) मीनू ने नीलिमा के यहाँ नामकरण संस्कार में जाने के लिए कॉलेज की छुट्टी ली और जल्दी तैयार हो नीलिमा की खुशी में शामिल होने उसके घर पहुँच गई। जब वह नीलिमा से बातें कर रही थी कि अचानक उसकी नज़र अमित पर पड़ी मीनू ने यह कल्पना नहीं की थी कि किसी दिन अमित से उसका सामना इस तरह होगा। अमित को देख उसके मन में घृणा उत्पन्न हो जाती है। उसे याद आता है कि उन लोगों ने उसका रिश्ता ठुकराकर उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई थी।

14. (i) वक्ता माँ जानती है कि उसके दोनों बेटों को न धन का मोह है न ही अपने परिवार के प्रति प्रेम है।

(ii) 'माया-ममता किसी को नहीं छू गई है' इसका आशय है कि माँ ये कहना चाहती है, कि उसके दोनों बेटों को न तो धन का मोह है और न ही अपने परिवार के प्रति-प्रेम है।

(iii) हर बात में देश, धर्म और कर्त्तव्य की दुहाई देना उन्होंने सीखा है। आखिर इनका बाप भी तो ऐसा ही निमर्म था। दुनियाँ ने दाँतों तले उँगली दबाकर कहा था—ऐसा भी क्या बाप जो अपने बेटे के लिए भी नहीं रोता। उसी बाप के ये बेटे हैं।

(iv) अतुल एकांकी का प्रमुख पुरुष पात्र है। वह माँ का छोटा बेटा, अविनाश का अनुज और उमा का पति है। वह प्राचीन संस्कारों को मानते हुए आधुनिकता में यक़ीन रखने वाला एक प्रगतिशील नवयुवक है। वह माँ का आज्ञाकारी पुत्र होते हुए भी माँ की गलत बातों का विरोध भी करता है। जब अविनाश की पत्नी बीमार पड़ जाती है तब माँ अपने बड़े लड़के के घर जाना चाहती है। उस वक्त अतुल स्पष्ट शब्दों में माँ से कहता है—"यदि तुम उस नीच कुल की विजातीय भाभी को इस घर में नहीं ला सकीं तो जाने से कुछ लाभ नहीं होगा।" अतुल संयुक्त परिवार में विश्वास रखता है। उसमें भ्रातृत्व की भावना है। वह अपने बड़े भाई का सम्मान करता है।

15. (i) प्रस्तुत पंक्तियों के वक्ता एकांकी के मुख्य पात्र जीवनलाल जी हैं और श्रोता जीवनलाल जी की बहू कमला का भाई प्रमोद है। जीवनलाल दहेज़-लोभी होने के कारण रमेश के विवाह में बारातियों की खातिर ठीक से होने व पूरा दहेज़ न मिलने से जीवनलाल जी लड़की वालों पर बहुत क्रोधित थे।

(ii) जीवनलाल के बेटे रमेश का विवाह प्रमोद की बहन कमला से हुआ था। रमेश के विवाह में पूरा दहेज़ न मिलने के कारण जीवनलाल जी को लड़की वालों पर बहुत गुस्सा आया था। उन्होंने प्रमोद से कहा कि रमेश की शादी में न बारातियों की खातिर ठीक से हुई और न ही उन्हें पूरा दहेज़ मिला था। जिस कारण से उनके मन में गहरा घाव हो गया है। इसी घाव को उन्होंने "मेरी चोट" कहा है।

(iii) जब जीवनलाल जी की बेटी गौरी को उसके ससुराल वालों ने यह कहकर विदा नहीं किया कि, उन्हें दहेज़ पूरा नहीं मिला है तब जीवनलाल जी को अपनी गलती का आभास हुआ और यह भी समझ में आ गया कि लड़की वाले क्यों न अपना सर्वस्व लड़के वालों को दे दें फिर भी वे कभी सन्तुष्ट नहीं होते हैं। उनके मन में पश्चाताप के भाव उनकी पत्नी राजेश्वरी जी ने पैदा किए थे। उन्होंने ही जीवनलाल जी को यह एहसास दिलाया था कि, वे भी किसी की बेटी के साथ ऐसा ही बर्ताव कर रहे थे। जो मावोचित नहीं था।

(iv) इस एकांकी का मुख्य उद्देश्य समाज से दहेज़ प्रथा का समापन करना है। स्वच्छ भारत का सपना पूर्ण तभी होगा जब देश की सोच भी स्वच्छ होगी। जब समाज में बेटी और बहू को एक ही समान प्यार और आदर दिया जाएगा। जब हर लड़के वाले यह सोचेंगे कि, वे अपने घर एक बहू नहीं एक बेटी लाएँ हैं तो दहेज़ और इससे उत्पन्न होने वाली सारी समस्याएँ ही दूर हो जाएँगी।

16. (i) दादा जी की वट-वृक्ष को देखकर अपने परिवार को उसके समान देखने की कल्पनाएँ जाग उठी। वह अपने परिवार को टूटते हुए नहीं देखना चाहते थे। उन्होंने सोचा कि वे परिवार के सभी सदस्यों को समझा देंगे। किसी को बेला का तिरस्कार करने का साहस नहीं रहेगा। वे अवश्य ही ऐसा कोई उपाय ढूँढ लेंगे कि वह स्वयं को परायों में घिरा हुआ महसूस नहीं करेगी ओर उनका परिवार बिखरने से बच जाएगा।

(ii) दादा जी वट-वृक्ष की तरह सँजोए परिवार के टूटने की बात से सिहर उठते हैं। छोटी बहू के अभिमान और घृणा के कारण परिवार में ईर्ष्या, द्वेष और परस्पर कलह होने की बात सुनी और यह जाना कि छोटी बहू को लेकर छोटी-छोटी बात पर झगड़ा होने, घर की सुखशान्ति मिटने तथा छोटी बहू द्वारा अपनी अलग गृहस्थी बसाने की बात से चिंतित हो उठते हैं।

(iii) दादा जी संयुक्त परिवार के पक्षधर हैं। परिवार को वे एक वट-वृक्ष मानते हैं और घर के सदस्यों को उस वट-वृक्ष की डालियाँ। इसलिए वे एक भी डाली को टूटने नहीं देना चाहते। वृक्ष की सभी डालियाँ साथ-साथ बढ़ें, फलें-फूलें, जीवन की सुखद शीतल वायु के परस से झूमें और सरसाएँ। पेड़ से अलग होने वाली डाली की कल्पना उनके अन्दर कम्पन पैदा कर देती थी। वे परिवार को वट-वृक्ष के सामान देखना चाहते थे।

(iv) दादा जी बेला की परिस्थिति समझते थे। बेला एक उच्च परिवार की पढ़ी-लिखी आधुनिक विचारों वाली लड़की थी, जो संयुक्त परिवार में खुद को नहीं ढाल पा रही थी। इस कारण उसमें और परिवार के लोगों में मतभेद हो रहे थे। परिवार के लोग उसकी निन्दा कर रहे थे तब दादा जी ने समझाया कि घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता।

●●